कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच

एन.सी.ई.आर.टी. *

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के विकास की प्रक्रिया के दौरान गठित इक्कीस राष्ट्रीय फ़ोकस समूहों ने स्कूली शिक्षा से जुड़े विविध मुद्दों जैसे–पाठ्यचर्या क्षेत्र, राष्ट्रीय चिंताएँ तथा व्यवस्थागत सुधारों पर विस्तार से चर्चा करते हुए आधार पत्र लिखे। उन आधार पत्रों में दी गई चर्चाओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गई। एन. सी. ई. आर. टी. की ओर से समय-समय पर की जाने वाली बैठकों, गोष्ठियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उन आधार पत्रों पर चर्चा की जाती रही है। भारतीय आधुनिक शिक्षा के माध्यम से भी उन चर्चाओं को पाठकों तक पहुँचाने के प्रयास किये गए हैं। इस अंक में 'कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच' पर बने फ़ोकस समूह द्वारा बनाये गए आधार पत्र में दी गई पाठ्य सामग्री के शुरुआती कुछ चुनिंदा अंशों को शामिल किया गया है। इस फ़ोकस समूह ने कला शिक्षा को किसी अन्य दूसरे विषयों के समान विद्यालयी पाठ्यचर्या का अभिन्न एवं आवश्यक अंग बनाने की ज़ोरदार सिफ़ारिश की एवं कहा कि कला शिक्षा प्रत्येक विद्यालय में दसवीं कक्षा तक अनिवार्य विषय के रूप में दी जाये। कला को पाठ्यचर्या में महत्त्व दिया जाना चाहिए और मात्र एक मनोरंजन का माध्यम एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने की गतिविधि नहीं समझना चाहिए। कला में शिक्षण से ज्यादा अधिगम अथवा सीखने पर बल दिया जाना चाहिए एवं शिक्षकों द्वारा निर्देशन के स्थान पर पारस्परिक सहयोग एवं प्रतिभागिता की नीति अपनानी चाहिए।

*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, *कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच,* राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र, से लिए गये चुनिंदा अंश (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 2009 में प्रकाशित)।

1. विद्यालयों में कला शिक्षा: एक अवलोकन

मध्यस्थता और सृजनात्मकता की हर जगह कमी है, विशेषकर विद्यालयों में। हमारे जीवन से कला विलुप्त हो रही है और हम हिंसा का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

—यहूदी मेनुहिन

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही विभिन्न शासकीय प्रपत्रों में विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के लिए कला शिक्षा को एक अत्यधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में इंगित किया गया है। जैसे कि 1952-53 शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में स्पष्ट रूप से लिखा गया है, ''विद्यार्थियों में क्रियात्मक ऊर्जा का संचरण किया जाये जिससे वे सांस्कृतिक विरासत और संपन्न रुचियों के विकास में समर्थ हो सकें, जिन्हें वे अपने खाली समय तथा बाद में अपने जीवन में भी जारी रख सकें।'' माध्यमिक शिक्षा की एक मुख्य भूमिका के रूप में इसका उल्लेख करते हुए यह सुझाव दिया गया है कि कला, संगीत, नृत्य इत्यादि विषयों को पाठ्यचर्या में एक सम्मानजनक स्थान दिया जाना चाहिए।

यह भी सुझाव दिया गया कि हाई स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थी को एक शिल्प सीखना चाहिए जो कि इस अवस्था के लिए ज़रूरी माना जाए; प्रत्येक विद्यार्थी को हस्त-कार्यों हेतु कुछ समय मिलना चाहिए जिसमें उसे एक उचित मानक दक्षता प्राप्त करनी चाहिए जिससे कि भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर वह इससे जीविकोपार्जन भी कर सके। किंतु यह प्रस्ताव मात्र आर्थिक आधार पर नहीं दिया गया था। हाथों से कार्य करके किशोर बच्चे श्रम का सम्मान करना सीखते हैं और रचनात्मक कार्य करने के आनंद का भी अनुभव करते हैं। उपयोग और सौंदर्य की वस्तुओं को निपुणता और संपूर्णता के साथ बनाने से ज्यादा बड़ा शिक्षा का कोई और माध्यम नहीं है। यह प्रायोगिक अभिरुचि को विकसित करता है, विचारों को स्पष्ट बनाने में सहायक होता है, सहकारी कार्यों हेतु अवसर प्रदान करता है और इस प्रकार संपूर्ण व्यक्तित्व को समृद्ध बनाता है।

कोठारी आयोग (1964-66) का प्रतिवेदन इस बात पर बल देता है कि उम्र की उस अवस्था में, जो खोज और आविष्कार को महत्व देती है, रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए शिक्षा का दिया जाना इसे और अधिक सार्थक बना देता है। "संगीत और दृश्य कला के शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु उचित सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। शिक्षा में कला की उपेक्षा शिक्षण प्रक्रिया को निर्धन बनाती है और सौंदर्यपरक रुचियों और मूल्यों को अधोगमन की ओर अग्रसर करती है।" यह संस्तुति दी गई कि शासन को कला शिक्षा की वर्तमान स्थिति के सर्वेक्षण के लिए विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त करनी चाहिए और इसके विस्तार और व्यवस्थित विकास हेतु संभावनाओं की खोज करनी चाहिए। आयोग ने यह भी प्रस्तावित किया कि स्थानीय समुदाय के व्यवहारिक सहयोग के साथ देश के सभी भागों में बाल भवन स्थापित किये जाने चाहिए। विश्वविद्यालय स्तर पर कला विभागों को सशक्त किया जाना चाहिए और इस क्षेत्र में शोध अध्ययनों को बढ़ावा देना चाहिए।

फलत: विद्यालयों में कला शिक्षा के सुधार के पूरे मुद्दे का परीक्षण करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के प्रशासनिक निकाय ने 1966 में श्री के.जी. सैयदैन की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की थी। समिति ने अपना प्रतिवेदन 1967 में प्रस्तुत किया था जिसमें दी गई संस्तुतियों में ज़ोर दिया गया था–स्कूलों में कला शिक्षण के लक्ष्यों और उद्देश्यों पर, मुख्य शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति में कला शिक्षा की ज़रूरी भूमिका तथा पूर्व प्राथमिक से शिक्षा के सभी स्तरों पर कला शिक्षा की आवश्यकता पर। इसकी संस्तुतियों में यह भी शामिल था कि कला विद्यालयों में पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात् उच्च प्राथमिक स्तर और माध्यमिक स्तर के शिक्षक बनने के लिए विद्यार्थी इन संस्थानों में कला शिक्षा के व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु प्रवेश प्राप्त कर सकें। कला शिक्षा विभाग विश्वविद्यालय के शिक्षक-शिक्षा संस्थानों में ही खोले जाने चाहिए। समिति ने यह भी प्रस्तावित किया कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में भी जल्दी ही एक कला शिक्षा विभाग की स्थापना की जानी चाहिए।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति, विद्यार्थियों में देश के विभिन्न भागों में रहनेवाले लोगों की विविध सांस्कृतिक और सामाजिक रीतियों की एक समझ बनाने को स्कूली शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते हुए इस पर ज़ोर देती है। 1986 की नीति का अनुगमन करते हुए 1992 की 'कार्यकारी योजना' ''बच्चे की जन्मजात संभावनाओं को खोजने के संदर्भ में बच्चे के व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के क्रम में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों को जोड़ने वाली शिक्षा'' पर स्पष्ट विचार प्रकट करती है। औपचारिक शिक्षा के पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतम स्तर तक एक क्रियान्वयन योजना तैयार की गई। आपसी भागीदारी, सांस्कृतिक अभिव्यक्तीकरण के लिए सस्ती एवं उपयोगी सामग्री का उपयोग और भाईचारे की धारणा को प्रोत्साहित करने के लिए समुदाय की सक्रिय भागीदारी, पाठ्यचर्या सुधार, शिक्षकों की अभिप्रेरणा, युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक एवं सम्मिलित क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना, आदि इस प्रपत्र के उत्कृष्ट अभिलक्षण थे।

पहली तीन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं (1975, 1988 और 2000) ने विद्यालयी पाठ्यचर्या में कला शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कला शिक्षा पर बल दिया है। विविध कलाओं, नृत्य, संगीत, चित्रकारी इत्यादि का शिक्षण विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं को खोजने के अवसर देने और उन्हें इस प्रक्रिया में मदद तथा बढ़ावा देने के एक समान मूल सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। एक महत्वपूर्ण बदलाव था कला शिक्षा के उद्देश्य में, जो अब शिल्प कार्य करने में श्रम की गरिमा का बढ़ावा न रहकर सौंदर्यपरक संवेदनशीलता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास हो गया। इन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं ने अनुशंसित किया कि ''कला शिक्षा कार्यक्रम ऐसा हो जो शिक्षार्थी को लोक कला, स्थानीय कला और अन्य सांस्कृतिक घटकों से परिचित कराने पर ध्यान

केंद्रित करे जिससे उसमें राष्ट्रीय विरासत के प्रति जागरुकता और सम्मान का भाव विकसित हो सके। अन्य केंद्रीभूत अवयवों से संबंधित मूल्यों जैसे–भारत की सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास एवं पर्यावरण संरक्षण आदि को प्रोत्साहित करने के लिए क्रियाकलापों तथा योजनाओं और विषयवस्तुओं का भी चयन एवं निर्माण करना चाहिए।'' स्वयं कुछ करके सीखना और कला के प्रकारों से अवगत होना शिक्षार्थी के स्वयं के अनुभवों के विस्तार हेतु अति आवश्यक है। कला शिक्षा विखंडित नहीं होनी चाहिए। कक्षा दस तक सभी स्तरों में कला का समन्वय आवश्यक है।

विद्यार्थियों पर पाठ्यचर्या के बोझ को कम करने के माध्यमों तथा तरीकों और साथ ही साथ जीवनपर्यंत स्व-शिक्षण और दक्षता निर्माण के लिए अधिगम की गुणवत्ता में सुधार करने के उद्देश्य से 1992 में प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई। इस समिति के प्रतिवेदन के फलस्वरूप अनुशंसाओं की एक सूची–''शिक्षा बिना बोझ के'' के रूप में सामने आई। किंतु व्यवहार में भार बढ़ा ही और स्व-अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता के कम ही अवसर शेष रहे।

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश नहीं है जहाँ कला शिक्षा की समस्या विद्यमान है। यह एक विश्वव्यापी समस्या है जिसको 2000 में यूनेस्को के महानिदेशक ने एक अपील के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें कला शिक्षा और रचनात्मकता को शांति की संस्कृति के विकास के लिए विद्यालयों में प्रोत्साहित करने की अपील की गई है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि–

अब एक अधिक संतुलित शिक्षा की आवश्यकता है, जहाँ विज्ञान, तकनीक और खेल संबंधी विषयों के साथ मानव विज्ञान और कला शिक्षा भी विद्यालयी शिक्षा के हर स्तर पर कदम से कदम मिलाकर चले। जिसके दौरान बच्चे और किशोर सीखने की ऐसी प्रक्रिया में भाग लें जो उनके लिए फ़ायदेमंद हो और जो उनमें बौद्धिक और भावनात्मक संतुलन बनाए रखे। ऐसे परिप्रेक्ष्य में खेल क्रियाएँ सृजनात्मकता को सजीव बनाने का एक ऐसा कारक हैं जिसे कला शिक्षा में प्रोत्साहन की ज़रूरत है। कला शिक्षा शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क को भी प्रेरित करने वाली होनी चाहिए। भावनाओं को गति प्रदान कर यह मस्तिष्क का विकास करती है। यह स्मृति बढ़ाती है जिससे बच्चे की संवेदनशीलता तीक्ष्ण होती है और वे अन्य विषयों के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनते हैं, मुख्य रूप से विज्ञान के लिए यह रचनात्मक योग्यताओं का विकास करती है और उनके आवेग को उनके मनपसंद कार्यों को करने की ओर मोड़ती है।

2. कला शिक्षा में शिक्षण-अधिगम तथा मूल्यांकन की वर्तमान स्थिति

पिछले पन्नों में हमने देखा कि किस प्रकार शिक्षा के लगभग प्रत्येक प्रपत्र में कला शिक्षा पर बल दिया गया है परंतु वस्तुस्थिति यह है कि विद्यालयों, शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रबंधकों सभी के द्वारा कला को गौण स्थान दिया जाता है,

जबकि विद्यार्थी कला संबंधी गतिविधियों में अत्यधिक रुचि रखते हैं। कला शिक्षा की वर्तमान स्थिति यह है कि विगत कुछ दशकों में यह बद-से-बदतर होती चली गई है।

कला शिक्षा की वर्तमान स्थिति के पीछे बहुत से कारण हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कला शिक्षा में किये जा रहे शोध कार्य "शिक्षण-अधिगम प्रणाली एवं मूल्यांकन पद्धति—एक गहन अध्ययन" में जो समस्याएँ सामने आ रही हैं उनसे दृष्टिगोचर होता है कि विद्यार्थी अपनी प्रारंभिक शिक्षा के वर्षों में सृजनात्मकता में रुचि रखते हैं परंतु कक्षा 6 तक पहुँचते-पहुँचते कला शिक्षा में उनकी रुचि क्रमशः कम होती जाती है।

इसके अनेक कारण हैं। इनमें विद्यालयों में मुख्य विषयों पर अधिक बल दिया जाना प्रमुख है। इन विषयों में संपूर्ण सत्र में विभिन्न परीक्षाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। कला शिक्षा का मूल्यांकन अन्य विषयों के साथ जुड़ा न होने के कारण शिक्षकों, विद्यार्थियों यहाँ तक कि विद्यालयों द्वारा भी उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता है।

एक और बड़ी समस्या है ऐसे शिक्षकों की कमी जो कला शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित हों। ऐसे कला शिक्षक जो 4 से 6 वर्षों तक कला महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों के विभिन्न दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कला में कला विभागों से शिक्षित होते हैं, उन्हें कला शिक्षा का न तो प्रशिक्षण प्राप्त होता है और न ही विद्यालय में

विद्यालयों में कला शिक्षा के स्तर में सुधारों हेतु सुझाव

- कला शिक्षा को कक्षा 10 तक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाना चाहिए।
- ऐसे मूल्यांकन की आवश्यकता है जो कि परीक्षा पर आधारित न होकर प्रक्रिया संबंधी हो।
- कला शिक्षा विद्यार्थियों के लिए एक आनंददायी, उन्मुक्त अभिव्यक्ति हेतु सीखने की प्रयोगात्मक प्रक्रिया होनी चाहिए।
- विद्यालय तथा विद्यालय से बाहर कलात्मक गतिविधियों के लिए स्थान, समय एवं संसाधन एकत्रित करना प्रत्येक विद्यालय के लिए आवश्यक होना चाहिए।
- शिक्षा से संबंधित विभिन्न वर्गों में कला शिक्षा के प्रति अधिक जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।
- कला शिक्षा पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं को प्रभावकारी ढंग से कार्यान्वित करने हेतु विद्यालयों एवं शिक्षकों के लिए स्पष्ट निर्देश होने चाहिए।
- शिक्षण-प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास के विभिन्न स्तरों में सशक्त बदलाव लाए जाने की आवश्यकता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर से कला शिक्षा को प्रशिक्षित एवं विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए।

कला शिक्षा पद्धतियों का। वे अपनी विधा में तो प्रशिक्षित होते हैं परंतु कला शिक्षक के रूप में नहीं। वे 10–15 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए कला शिक्षण की विधियों में दक्ष नहीं होते। एक शिक्षक की भूमिका विद्यार्थी के जीवन में वाहन की तरह होती है अत: शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान, शिक्षाशास्त्र एवं शिक्षण विधाओं का ज्ञान होना भी आवश्यक है। कला शिक्षा गतिविधियों पर आधारित विषय है जिसके लिए पाठ्यपुस्तकों की जरूरत नहीं है। अत: ऐसी स्थिति में शिक्षक की भूमिका और भी अहम हो जाती है। उन्हें अन्य शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सजग, रचनात्मक एवं सृजनशील होना चाहिए।

कला शिक्षा का मुख्य धारा में महत्व न होने का अन्य कारण है विद्यार्थियों तथा अन्य शिक्षकों में कला–संबंधी व्यवसायों के बारे में विस्तृत जानकारी का न होना। शिक्षकों को कला शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ने, उसमें प्रशिक्षण पाने एवं कलाकार के रूप में जीविकोपार्जन करने के विषय में विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए। कला शिक्षक को इस योग्य होना चाहिए कि वह विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों और विद्यार्थियों को कला शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से अवगत करा सके जिन्हें विद्यार्थी अपने दैनंदिन जीवन में या तो कलाकार के रूप में या कला पारखी के रूप में उतार सकें।

3. कला शिक्षा के उद्देश्य: भविष्य की संकल्पना

एक विद्यार्थी के प्रखर व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में साहित्य, संगीत और कला सभी आवश्यक हैं।

–रवीन्द्रनाथ टैगोर

कला शिक्षा को विद्यार्थियों में रेखा, आकार, रंग, रूप, गति एवं ध्वनि में उपस्थित सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के उपकरण के रूप में देखा जाता है। कला शिक्षा एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति सराहना के भाव साथ–साथ विकसित हो सकते हैं जिससे परस्पर समझ मज़बूत होती है।

विद्यालयी शिक्षा की पाठ्यचर्या में कला शिक्षा को कक्षा 10 तक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने के विशेष लक्ष्य हैं जिनमें बच्चों के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास में योगदान देना मुख्य है। शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में बच्चों को आनंद उठाने में समर्थ बनाना भी एक उद्देश्य है। कला शिक्षा बच्चों को सांसारिक सौंदर्य की पूर्ण सराहना एवं अनुभव करने योग्य बनाती है तथा स्वस्थ मानसिक विकास में मददगार सिद्ध होती है। कला शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य बच्चों को प्रकृति के करीब लाना है जिससे वे अपनी धरोहर तथा परंपराओं से अवगत हों और एक दूसरे के कार्य को सम्मान से देखें।

शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में प्राप्त किये अनुभव को माध्यमिक स्तर पर संगीत, नृत्य, नाटक, रेखांकन और पेंटिंग, कठपुतली, पारंपरिक कलाओं एवं शिल्प, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा संबंधी गतिविधियों में भाग लेने का अवसर देकर संवर्द्धित किया जा सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में यह आशा व्यक्त की गई है कि प्राथमिक स्तर पर ललित कलाओं के प्राप्त अनुभवों से विद्यार्थियों में आगे की अवस्थाओं में कला के विभिन्न रूपों का चुनाव करने हेतु न केवल पर्याप्त प्रेरणा और रुचि जागृत होगी

वरन् सौंदर्यात्मकता के प्रति संवेदनशीलता और परंपरा तथा विरासत के प्रति सम्मान भी जाग्रत होगा।

दुर्भाग्यवश, हमारी शिक्षा पद्धति भारत के महान शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों को महत्व नहीं देती, जैसा कि श्री अरविंद ने कहा, 'प्लेटो ने अपनी पुस्तक *रिपब्लिक* में शिक्षा में संगीत के महत्व पर अत्यधिक बल दिया है; ऐसा संगीत जिसके लोग अभ्यस्त हों, वही उन लोगों के चरित्र को लक्षित करता है। चित्रकला और मूर्तिकला का महत्व भी कम नहीं है। जो देखा जाता है उसका सर्वाधिक प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है, यदि आँखें बाल्यावस्था से ही सौंदर्य, सामंजस्य और रूप-रंग देखने की अभ्यस्त होंगी तो बड़े होने पर उनकी रुचि, आदतें एवं चरित्र स्वत: उसी प्रकार के सौंदर्य, सामंजस्य और व्यवस्था का अनुसरण करेंगे...'

3.1 पूर्व-प्राथमिक स्तर

पूर्व-प्राथमिक स्तर पर दृश्य एवं मंचीय कलाएँ पूर्ण समन्वित रूप से पढ़ाई जानी चाहिए। सभी विषयों को रेखांकन, चित्रकला, मृणमूर्त कला, रोल-प्ले, नृत्य, कहानी, संगीत आदि के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए। कला शिक्षा के माध्यम से पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य भी सामान्य शिक्षा के उद्देश्य के समान होना चाहिए।

इस स्तर पर बच्चों को बिना पाठ्यक्रम के बोझ के आनंदपूर्वक सीखने का अनुभव होना चाहिए। उन्हें अपने परिवेश एवं दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले मूल्यों की जानकारी दी जानी चाहिए। इस स्तर पर बच्चे द्वारा स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर ज़ोर दिया जाना चाहिए।

पूर्व-प्राथमिक स्तर पर कला माध्यम से शिक्षा देने का उद्देश्य मुख्यत: बच्चों में पांचों इंद्रियों को विकसित करना है। पाठ्यचर्या का यह क्षेत्र बच्चे के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास के लिए अनुभव एवं क्रियाकलाप के अवसर प्रदान करता है। अत: इसे उनके विकास के स्तर के अनुरूप होना चाहिए। विशेषत: जहाँ संगीत, नाटक, रेखांकन, चित्रकला, मिट्टी के मॉडलों आदि द्वारा संतोषपूर्ण अनुभव दिये जाएँ, वहीं कहानी और कथानकों का चुनाव इस प्रकार हो कि वे बच्चों

प्राथमिक स्तर पर उद्देश्य

- आनंद का अनुभव
- बच्चे को अपने आस-पास के माहौल जिसमें कक्षा, विद्यालय, घर और समुदाय सम्मिलित हैं उसे स्वच्छ और सुंदर रखने के लिए कलात्मक विधाओं का प्रयोग करना सिखाना, जिसमें उसे आनंद आता हो।
- बच्चे को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना।
- बच्चे में निरीक्षण, अन्वेषण एवं अभिव्यक्ति द्वारा सभी संवेदनाओं का विकास करना।

की जिज्ञासा, कल्पनाशीलता तथा आश्चर्यबोध बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभाएँ।

3.2 प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर पर कला को स्व-अभिव्यक्ति का माध्यम माना जाये। कला शिक्षा का लक्ष्य स्व-अभिव्यक्ति, सृजनात्मकता और स्वतंत्रता की अनुभूति के द्वारा मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य में योगदान देना हो।

3.3 उच्च प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा ललित कला के अनुभव उनमें विषय के प्रति पर्याप्त मात्रा में प्रोत्साहन एवं रुचि पैदा कर देते हैं। उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तरों पर कला की पाठ्यचर्या के उद्देश्य हैं शास्त्रीय एवं लोक कलाओं के प्रति जागरूकता और रुचि पैदा करना ताकि इस प्रक्रिया में शिक्षार्थी आनंद ग्रहण करने तथा प्रदान करने वाले की भूमिका अदा करे। कला शिक्षा रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक अत्यंत संतोषदायी माध्यम है जिसे समाज के हित के लिए महत्व दिया जाना चाहिए। उच्च प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभागिता, सामुदायिक मदद और कुछ आधारभूत सुविधाओं का निर्माण होना चाहिए।

3.4 माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर सौंदर्यबोधात्मक संवेदनशीलता का संवर्धन और प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक संरक्षण पर आधारित परियोजनाओं एवं भारतीय संस्कृति के अध्ययन के द्वारा सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाले स्तर के रूप में पहचाना जाता है। कलाकारों (समुदाय में) के साथ काम करने के अवसर, समुदाय में पर्व एवं उत्सव मनाना, भौतिक पर्यावरण एवं आस-पास के दृश्य को सजाना इत्यादि के लिए यह सही अवधि है। इस स्तर पर कला शिक्षा में दृश्य एवं मौखिक संसाधनों और उनके अन्वेषण; रचनात्मक परियोजना कार्यों एवं उनका प्रदर्शन; अंतर्समूहिक और अंतर्विद्यालयी गतिविधियाँ; अध्ययन भ्रमण तथा समुदाय के कलाकारों से साक्षात्कार; नाटक सहित समुदाय एवं आस-पास के क्षेत्रों में प्रचलित

उच्च प्राथमिक स्तर पर उद्देश्य

- आनन्द का अनुभव।
- विद्यार्थियों को विभिन्न कलाओं को पहचानने एवं सराहने के योग्य बनाना।
- संवेदनशीलता एवं सौंदर्यबोध की अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
- कला के ज्ञान का जीवनचर्या एवं अन्य विषयों के साथ समन्वयन बनाना।
- विद्यार्थियों को अधिक सृजनात्मक बनाना।
- शिक्षार्थियों को देश की समृद्ध धरोहर के प्रति जागरूक बनाना।

माध्यमिक स्तर पर उद्देश्य

- आनंद का अनुभव।
- विद्यार्थियों को नए माध्यमों एवं तकनीकियों से अवगत कराना जो उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सामान्य जरूरतों की वस्तुओं को बनाने में सहायक सिद्ध हो सके।
- लोक कलाओं, क्षेत्रीय कलाओं एवं सांस्कृतिक घटकों की जानकारी के अवसर प्रदान करना जिससे वे राष्ट्रीय धरोहर और सांस्कृतिक विविधता की सराहना कर सकें।
- विद्यार्थियों को उनकी कलात्मकता एवं सौंदर्य अनुभूति को दैनिक जीवन में प्रयोग करने के योग्य बनाना।
- अपने क्षेत्र के कलाकारों के जीवन एवं कार्य से परिचित कराना।
- समुदाय के सहयोग से अपने क्षेत्र में उपलब्ध सामग्री के ज़रिये सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना।
- प्रकृति एवं कलाओं के मूल तत्वों में उपस्थित सौंदर्य की प्रशंसा करने की क्षमता परिष्कृत करना।

पारंपरिक कला जिसमें कि समुदाय तथा पड़ोस में प्रचलित सामाजिक कला भी शामिल है, इन सबका गहन अध्ययन आदि अधिगम का हिस्सा होना चाहिए।

शिक्षा में दृश्य एवं मौखिक संसाधनों और उनके अन्वेषण; रचनात्मक परियोजना कार्यों एवं उनका प्रदर्शन; अंतर्सामूहिक और अंतर्विद्यालयी गतिविधियाँ; अध्ययन भ्रमण तथा समुदाय के कलाकारों से साक्षात्कार; नाटक सहित समुदाय एवं आस-पास के क्षेत्रों में प्रचलित पारंपरिक कला जिसमें कि समुदाय तथा पड़ोस में प्रचलित सामजिक कला भी शामिल है, इन सबका गहन अध्ययन आदि अधिगम का हिस्सा होना चाहिए।

ऐसी गतिविधियों, कार्यक्रमों एवं विषयवस्तुओं का चुनाव किया जाना चाहिए जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़े मूल्यों को बढ़ावा मिल सके। कार्य करके सीखना एवं कला के विभिन्न रूपों के परिचय से शिक्षार्थी के अपने अनुभवों तथा स्व-अभिव्यक्ति को विस्तार मिलता है।

इस स्तर पर पाठ्यचर्या में प्रत्येक विषय विशिष्ट होता है एवं उसे पृथक् रूप से पढ़ाया जाता है। इसी प्रकार कला शिक्षा को भी एक विशेष विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा ऐसी हो जहाँ कला ज्ञान लेने का एक मार्ग बने। विश्व के साथ परस्पर बातचीत और सीखने की अमौखिक प्रक्रिया को कला शिक्षा उपलब्ध कराती है। ज्ञान-निर्माण एवं रचनात्मक सार्थकता का माध्यम बनती है। कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रक्रिया विद्यार्थियों में सामाजिक यथार्थ, वैश्विक विचारों, भावनाओं और यहाँ तक कि मायावी जगत की जानकारी का अन्वेषण करने का अवसर देती है।

इस स्तर पर कला शिक्षा मीडिया तथा कलाकारों की सामग्री को शामिल करेगी।

3.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर

शिक्षा में यह स्तर सर्वाधिक चुनौती भरा होता है जहाँ विद्यालयों में बहुत कम ही विद्यार्थी प्रवेश पाते हैं। कक्षा 11–12 में कला एक अनुशासित विषय की ओर उन्मुख होती है।

कला शिक्षा से तात्पर्य है समुदाय की सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानना, कलात्मक सौंदर्य की भाषा सीखना, विवेचना एवं कला इतिहास की पूर्ण जानकारी प्राप्त करना। इसके साथ ही कला संबंधी विभिन्न व्यवसायों के बारे में जानकारी लेना और स्वयं को कला जगत में एक कलाकार, एक रचनाकार, आलोचक अथवा कला पारखी के रूप में प्रवेश पाने के लिए तैयार करना।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उद्देश्य

- कला रूप में दक्षता प्राप्त करना।
- कला संबंधी किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए तैयार होना।
- अपने क्षेत्र, देश अथवा विश्व के कलाकारों एवं उनके कार्य की जानकारी कला इतिहास के माध्यम से प्राप्त करना।
- विभिन्न माध्यमों के प्रयोग द्वारा स्व-अभिव्यक्ति के तरीकों का विकास करना।
- कला में आनंद का अनुभव करना।